मार्च १९८९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

कृतज्ञता विभोर सही वंदना

(२)

कोई भाग्यशाली व्यक्ति स्वयं भगवान तथागत के संपर्क में आता है। उनकी अमृतवाणी सुनकर समुत्साहित होता है। जीवन मरण के भवचक्र से छुटकारा पाने के लिए कृतसंकल्पहोता है। भगवान से साधना की विधि सीख कर किसी एकांत स्थान में जाकर तपता है। शील का पालन करते हुए समाधि को सम्पुष्ट करता है और भावनामयी प्रज्ञा जगाकर विपश्यना का अभ्यास करता है और यों अपने एक एक पूर्व संचित कर्मसेस्कारोंका प्रहाण करता हुआ चित को संस्कार विहीन कर लेता है। भवनेत्री काट लेता है। समस्त आस्रवों का क्षय करके अनास्रव हो जाता है। कृतकृत्य हो जाता है, भारमुक्त हो जाता है, पुनर्जन्म से छुटकारा पा लेता है तो स्वभावतः भगवान के प्रति असीम कृतज्ञता से विभोर हो उठता है।

ऐसा ही एक शाक्य राजकुमार। नाम भगु। सद्धर्म के संपर्क में आया तो श्रद्धापूर्वक प्रव्रजित हो विपश्यना साधना में जुट गया। परन्तु बार बार आलस्य सिर पर सवार होने लगा। अपने मार्गदर्शक का आदेश याद आया – "बहुत आलस्य आए तो कुछ देर चंक्रमण करो याने चलते हुए साधना करो।" तो ऊंचे बने हुए चंक्रमण स्थान पर चलते हुए साधना करने लगा। परन्तु निद्रा इतनी प्रबल थी कि चंक्रमण भूमिसे नीचे गिर पड़ा। इससे हतोत्साहित होने के बजाय घुटने झाड़कर उठा और दुगुने पराक्रम से चंक्रमण करने लगा। निद्रा-आलस्य के इस आवरण को दूर करकेसाधना में लीन हो गया। यों चलते चलते साधना करते हुए मन को सजग भी कर लिया और समाहित भी। यों करते हुए,

ततो मे मनसीकारो योनिसो उदपज्जथ

मेरे मन में योनिसोमनसिकार जागा यानी सम्यक् संकल्प जागा।

आदिनवो पातुरहु

इस चित्त और शरीर प्रपंच के प्रति जो आसक्ति है वह कितनी खतरनाक है, यह बोध जागा। परिणाम स्वरूप,

निब्बिदा समतिट्ठथ

इस प्रपंच के प्रति निर्वेद जागा और मन स्थिर हुआ।

ततो चित्तं विमुच्चि मे

इससे मेरा चित्त विमुक्त हुआ। सभी संस्कारोंसे छुटकारा पा लिया।

पस्स धम्मसुधम्मतं

देखो, धर्म की इस सुधर्मता को देखो, महिमा को देखो, महत्ता को देखो।

तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता

मैंने तीनों विद्याएं प्राप्त कर ली

कतं बुद्धस्स सासनं

और बुद्ध के शासन को याने शिक्षा को पूरा कर लिया।

यों धर्म की महिमा गाता हुआ विमुक्त साधक बुद्ध की ही महिमा गाता है। धर्म की वन्दना करता हुआ बुद्ध की ही वंदना करता है।

---::---

भगवान के जीवन काल की एक और घटना –

श्रावस्ती के धनी ब्राह्मण कुल में जन्मा सुगन्ध नामक युवक। विपश्यना साधना सीखकर घर से बेघर हो एकांत में जाकर अभ्यास करने लगा। पूर्व जन्मों की संचित पारमिताओं के कारण सात दिनों की तपस्या से ही अर्हंत अवस्था प्राप्त कर ली और मुक्ति के हर्ष में, उसने यह मोद भरे शब्द कहे।

अनुवस्सिको पब्बजितो

वर्षा के बाद ही तो मैं प्रव्रजित हुआ।

पस्स धम्मसुधम्मतं

देखो धर्म की सुधर्मता को। देखो धर्म की महिमा को।

तिस्सो विज्जा अनुपत्ता

इतनी शीघ्र तीनों विद्याओं (दिव्य दृष्टि, पूर्व जन्मों की स्मृति और आस्रव-क्षययुक्त अवस्था) का साक्षात्कार कर,

कतं बुद्धस्स सासनं

मैंने बुद्ध का सासन पूरा किया। उनकी शिक्षा के अनुसार जो कुछ करना था सारा पूरा कर लिया। शील, समाधि, प्रज्ञा में प्रतिष्ठित हो निर्वाण का साक्षात्कार कर लिया।

धन्य है धर्म की धर्मता, धन्य है धर्मपालक की महत्ता।

---::---

भगवान के जीवन काल का एक और घटना –

मगध के एक ब्राह्मणकुल में उत्पन्न मेत्तजि नामक युवक। अपने पूर्व जीवन के कुशल कर्मों के कारण तरूण अवस्था में ही काम-भोग के जीवन से विरक्ति उत्पन्न हुई और वन में रहता हुआ तापस का जीवन जीने लगा। परन्तन सही मार्ग न मिलने के कारण भटकता रहा। कालांतर में बुद्ध के बारे में प्रशंसा के शब्द सुने तो उनसे मिलने आया। लगता है उन दिनों मुक्ति के दो ही रास्ते लोकमान्य थे। एक तो गृहस्थ आश्रम के सभी कामभोगोंमें लिप्त रहते हुए कुसीपुरोहित द्वारा यज्ञादि का कामकरवाकर किसी देवी-देवता, ईश्वर-ब्रह्म को प्रसन्न कर मुक्त होने की मान्यता। दूसरा निवृत्ति का मार्ग याने गृहत्याग कर शरीर को घोर कष्ट देकर मुक्त होने की मान्यता। प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्गों के विषय में उसने भगवान से अनेक प्रश्न किए और भगवान ने इन दोनों को छोड़कर मध्यम मार्ग के औचित्य को समझाया। इससे संतुष्ट होकर, श्रद्धाबहुल होकर उसने शुद्ध धर्म की साधना शुरू की। अरण्य में जाकर कठिन परिश्रम करते हुए विपश्यना विधि से अपने समस्त संचित कर्मसेस्कारोंका उत्खनन कर मुक्त अवस्था प्राप्त की। अपने अन्तर्मन की आस्रव-विमुक्ति का साक्षात्कार कर कृतज्ञता के भावों से अभिभूत हुआ और भगवान के प्रति वंदना की गया गाथा गायी।

नमो हि तस्स भगवतो

नमस्कार है उन भगवान को।

सक्यपुत्तस्स सिरीमतो

उन शाक्यपुत्र को जो धर्मकाया के श्रीवैभव से संपन्न हैं।

तेना'यं अग्गपत्तेन

जिन्होंने स्वयं निर्वाण की अग्र अवस्था प्राप्त करके

अग्गधम्मो सुदोसितो

अग्र धर्म का अच्छा उपदेश दिया।

ऐसे अग्र धर्म का पालन करता हुआ मेताजि स्वंय अग्र अवस्था प्राप्त कर जब बुद्ध की वंदना करता है तो सही

वंदना ही करता है। अग्र धर्म की ही वंदना करता है।

साधकों आओ! हम भी इसी प्रकार अग्रधर्म को धारण कर अग्र प्राप्त सम्यक्सम्बुद्ध की सही वंदना करें और अपना कल्याण साध लें।

कल्याणमित्र

स. ना. गो.